अध्ययन सामग्री
बी० ए० पार्ट - 3
हिन्दी -
डॉ० वज्रांग प्रताप केसरी, हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

10.02.24

रूपक अलंकार

उपमेय में उपमान का सीधा आरोप रूपक अलंकार कहलाता है। तात्पर्य यह है कि जब एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु इस प्रकार रखी जाये की दोनों समरूप हो जायें- दोनों में कोई फर्क नहीं मालूम पड़े, तो रूपक अलंकार होता है। यथा - बच्चा फूल है, इसमें बच्चे पर फूल का आरोप है, बच्चे और फूल के बीच के भेद को मिटा दिया गया है और दोनों को सर्वथा एक कर दिया गया है। वक्ता का आशय है कि फूल और बच्चा दोनों एक ही हैं। आरोप को अभेद और तादात्म्य भी कहा जाता है।

उपमा की भाँति रूपक भी बड़ा महत्त्वपूर्ण अलंकार है । इसके तीन प्रमुख भेद हैं–

(क) निखयव (निरंग रूपक)

(ख) सावयव (सांग) रूपक

(ग) परम्परित रूपक

(क) निरवयव या निरंग रूपक :– जहाँ अंगों के बिना उपमान का उपमेय में आरोप हो, वह निरंग रूपक होता है । इसमें एक उपमेय में एक उपमान का आरोप किया जाता है ।

राम चरित–सर बिनु अन्हवायें ।
सो श्रम जाइ न कोटि उपायें ।।

बालकांड, दोहा –11/5

यहाँ केवल राम रचित पर सर (तालाब) का आरोप किया गया है । अतः निरंग रूपक है ।

इस अर्द्धाली की भाव–सुषमा यह है कि कवि वृन्द को अपनी वाणी और लेखनी का प्रयोग राम जैसे उदात्त चरित के गुणानुवाद में करना चाहिए । सांसारिक मनुष्यों का चरित्रांकन कर इनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

मुदित मातु सब सखी सहेली ।
फलित बिलोकि मनोरथ बेली ।।

अयोध्याकांड, दोहा– 1/7

यहाँ केवल मनोरथ पर बेली (लता) का आरोप होने से निरंग रूपक अलंकार है ।

कवि का आशय है कि सभी मातायें और सखियाँ अपनी कामना रूपी लता को फलित देखकर अत्यन्त हर्षित हैं ।

बंदउँ गुरू पद पदुम परागा ।
सुरूचि सुबास सरस अनुरागा ।।

बालकांड, दोहा –1 /1

यहाँ मात्र गुरू के चरण पर पदुम (कमल) का आरोप किया गया है । अतः निरंग रूपक अलंकार है ।

इस अर्द्धाली का भाव–सौदर्य यह है कि गुरूदेव का वह चरण–कमल सहज ही वन्दनीय है जो सुन्दर, स्वाद, सुगंध और अनुराग रस से पूर्ण है, और संजीवनी की भाँति सभी भव रोगों का विनाश करने वाला है ।

(ख) सावयव या सांग रूपक :– अंगों सहित उपमान का उपमेय में आरोप करना सावयव या सांग रूपक कहलाता है ।

सांग रूपक में जिस आरोप की प्रधानता होती है, उसे अंगी कहते हैं । अन्य शेष आरोप गौण रूप से इसके अंग के रूप में प्रस्तुत होते हैं । जैसे "आकाश– पनघट में

इस प्रकार अंगो सहित उपमेय पर उपमान का आरोप होने से सांग रूपक अलंकार घटित होता है ।

गोस्वामी तुलसी दास भारतीय कृषि–संस्कृति की व्यापकता के कायल थे । उन्हें यह भली भाँति ज्ञात था कि भारतीय जनमानस को कृषि के उपादानों द्वारा जितनी सहजता से कोई अर्थ बोध कराया जा सकता है उतनी अन्य विधि से कदापि नहीं । और सचमुच उन्होंने कृषि संस्कृति से उपमानों का प्रयोग कर राम–वन गमन के कारण अवध वासियों पर जो दुःख का पहाड़ टूटा है उसका मर्म स्पर्शी चित्र उपस्थित किया है ।

सोक कनक लोचन मति छोनी ।
हरी विमल गुन गनजग जोनी ।।
भरत विवेक वराह विसाला ।
अनायास उधरी तेहिकाला ।।

अयोध्याकांड, दोहा–297/3

उक्त चौपाई में शोक, मति, विमलगुण तथा भरत विवेक–उपमेय पर क्रमशः हरण्याक्ष, पृथ्वी, जगजोनी (जगतवासी) तथा बराह–उपमान का आरोप किया गया है । इस प्रकार यहाँ सांग रूपक है ।

जासू ज्ञान रबिभव निसि नासा ।
वचन किरण मुनि कमल बिकासा ।।

अयोध्याकांड, दोहा 277/1

यहाँ ज्ञान पर रवि, भव पर निसि, वचन पर किरण तथा मुनि पर कमल का आरोप है । इस प्रकार उपमेय पर उपमान का अंगों सहित आरोप होने से सांग रूपक है ।

आशय यह है कि जिन राजा जनक का ज्ञान रूपी सूर्य भव (आवागमन) रूपी रात्रि का नाश कर देता है, और जिनकी वाणी रूपी किरणें मुनि रूपी कमलों को खिला देती हैं, क्या मोह–ममता उनके समीप आ सकता है–कदापि नहीं । प्रकारान्तर से राजा जनक की प्रशंसा की गई है ।

(ग) परम्परित रूपक :– जहाँ एक आरोप दूसरे आरोप का कारण हो, वहाँ परम्परित रूपक होता है ।

परम्परा का तात्पर्य है शृंखला (बन्धन), जो कई आरोपों को एक साथ आबद्ध रखता है । उसमें एक आरोप पर दूसरा आरोप आधारित रहता है, यदि एक आरोप को विस्थापित कर दिया जाय तो दूसरा व्यर्थ हो जायेगा । परम्परित अलंकार में उपमेय में उपमान का आरोप स्वतः या वास्तविक समानता के आधार पर नहीं रहता । उसकी साम्यभावना दूरारूढ़ होती है । जैसे मुखचन्द में आनंददायकता और आकर्षण रूप धर्म उभय निष्ठ हैं, इसलिए मुख के साथ चन्द्र का साम्य प्रदर्शन असंगत या अस्वाभाविक नहीं लगता । पर यदि कोई न्यायप्रिय शक्तिशाली व्यक्ति की प्रशंसा में कहे–हे भद्र । आप दुष्ट सर्प के लिए गरूड़ सहश हैं तो यहाँ उस व्यक्ति तथा गरूड़ में कोई साम्य नहीं है । गरूड़

सर्प का विनाश करता है । अतः दुष्ट पर सर्प का आरोप होने से दुष्ट के विनाश समर्थ व्यक्ति पर गरूड़ का आरोप सार्थक है ।

परम्परित रूपक के दो भेद हैं–

1. केवल रूप – जहाँ एक आरोप दूसरे आरोप का कारण हो –

राम कथा सुन्दर करतारी ।
संसय बिहग उड़ावन हारी ।।

बालकांड, दोहा –114/1

यहाँ संशय में विहग का आरोप राम नाम से करताली (ताली) के आरोप का कारण है । संशय को विहग (पक्षी) मान लेने से रामनाम को ताली कहना युक्ति संगत होगा । इसका तात्पर्य यह होगा कि जैसे हाथ की ताली सुनते ही पक्षी उड़ जाते हैं, वैसे ही रामनाम के उच्चारण मात्र से मन के सारे संशय दूर हो जाते हैं । यहाँ रामनाम और करताली या संशय और विहग में स्वतः कोई साम्य नहीं है, पर एक आरोप द्वारा दूसरा आरोप भी सार्थक बन जाता है ।

तुम बिनु रघुकुल–कुमुद बिधु, सुरपुर नरक समान । *अयोध्याकांड, दोहा– 64*

यहाँ रघुकल में कुमुद का और राम में (तुम में) विधु (चन्द्र) का आरोप है । रघुकुल को कुमुद कहने से ही राम को विधु कहा गया है ।

2. मालरूप – जहाँ आरोपों की श्रृंखला सी बन जाए, अर्थात् जहाँ दो से अधिक आरोप रहें, वहाँ मालरूप रूपक होता है ।

राम कथा कलि पन्नग भरनी ।
पुनि विवेक पावक कहँ अरनी ।।

बालकांड, दोहा– 31/6

यहाँ कलियुग को पन्नग (सर्प) कहना रामकथा को भरनी (सर्पमंत्र) कहने का कारण है । जिस प्रकार मंत्र से सर्प का विष दूर होता है, वैसे ही राम नाम से कलियुग के कुप्रभाव का शमन होता है । अनन्तर विवेक में अग्नि का आरोप रामकथा में अरणी (आग पैदा करने वाली लकड़ी) के आरोप का कारण है । जिस प्रकार अरणी द्वारा अग्नि उत्पन्न की जाती है, उसी प्रकार राम कथा से विवेक उत्पन्न होता है । अतः राम कथा को अरणी या भरनी कहना तबतक सार्थक नहीं होता, जबतक विवेक को पावक या कलि को पन्नग न कहलें । इसलिए परम्परित रूपक के लक्षण में यह बताया गया है कि एक आरोप दूसरे आरोप का कारण होता है ।

महामोह धनपटल प्रभंजन ।
संसय – विपिन अनल सुररंजन ।।

लंका कांड, दोहा 114 ख (नीचे)/छन्द –1

यहाँ मोह या अज्ञान में घन पटल या मेघ का आरोप है जो राम में प्रभंजन (आँधी) के आरोप का हेतु या कारण है । उसी प्रकार द्वितीय अर्द्धाली में संशय में विपिन (वन)

का आरोप राम में अनल के आरोप का हेतु है । एक राम में प्रभंजन और अनल दो आरोपों के कारण यहाँ मालारूप परम्परित रूपक अलंकार हुआ ।

इस अर्द्धाली में राम का गुणगान किया गया है जो महामोह रूपी मेघ समूह को उड़ाने हेतु प्रचण्ड हवा के समान हैं और संशय रूपी वन को भस्म करने के लिए अग्नितुल्य हैं, तथा देवताओं को आनंद प्रदान करने वाले हैं ।